राष्ट्रकवि चकबस्तः एक परिचय

*डॉ. अनिता शर्मा

शोध सारांश

ब्रजनारायण चकबस्त एक जाने माने कवि है। इन्होंने अपनी शैशवास्था में अनेक समस्याओं का सामना करते हुऐ वकालत की परीक्षा में उर्तीर्ण हाकर सफल वकील बने। ये समाजसुधारक भी थे और सेवाकार्यो में सदा संनद्ध रहा करते थे। तभी ये उर्दू कविता भी करने लगे और शीघ्र ही अपनी प्रतिभा और लगन से उर्दू के कवियों की प्रथम पंक्ति में शामिल हो गये ।इन पर अनीस, आतिश तथा गालिब का अच्छा प्रभाव पड़ा। प्रायः उर्दू के कविगण ग़ज़लों से ही अपनी कविता आरम्भ करते थे परंतु उन्होंने नज्म द्वारा अपनी कविता आरम्भ कर ऐसी ग़ज़ले लिखी जिसका उर्दू काव्यक्षेत्र में कोई तोड़ नही। इनकी कविता में बौद्धिक कौशल अधिक है अर्थात केवल सुनकर आनंद लेने योग्य नही है अपितु पढ़कर मनन करने योग्य है।

कठिन शब्दार्थ

जुन्नार – यज्ञोपवीत, इलहाद – अधर्म, मसाइल – प्रश्नों, बाजीचए अतफाल – बच्चों के खेल,
हफ्तादों–दो – बहत्तर,
कसरत – बहुत्व, वहदत – एकत्व, जर्रओं खुरशेद – कण और सूर्य, निफ्राक – झगड़ा, ग्रबों मुसलमां – हिन्दू तथा मुसलमान, शीराजाबन्दी – एकता, सादात – सैयद लोग, सरमाए–तस्कीने–हयात – जीवन को तुष्ट करने वाला धन, मकां – चमत्कार, शौबदा – जीवन मदिरा का नशा, बर्सेहस्ती – जीवन रूपी पाठ, जिला – सफाई।

प्रस्तावना

बृजनारायण चकबस्त उर्दू–अदब का वो लोकप्रिय नाम है जो अपनी विशिष्ट शैली के लिये विख्यात है साधारणतः चकबस्त को राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाता हैं किन्तु चकबस्त के काव्य में धर्मसम्बन्धी, पुरातन–नवीन, शिक्षा सम्बन्धी, नसीहत, प्रेरणा, जीवन दर्शन, उत्साह, प्रकृति–चित्रण, भावनाओं का चित्रण, कल्पनात्मक काव्य, मनोहारी बिम्ब विधान, रूपक, उपमा–उत्प्रेक्षाओं का भी प्रयोग मिलता है।

जीवन परिचय

ब्रजनारायण चकबस्त का जन्म फैजाबाद में सन् 1882 में प्रसिद्ध तथा सम्मानित कश्मिरी परिवार में हुआ था। ब्रजनारायण के पिता पं. उदितनारायण चकबस्त डिप्टी कलेक्टर के ओहदे पर थे जो कि उस समय में एक उच्चतम पद हुआ करता था। पं. उदितनारायण काफी रंगीन मिजाज के व्यक्ति थे, 1887 में उनका निधन हो गया था। सारी जायदाद वे सुरा सुन्दरियों पर पहले ही निसार कर चुके थे अतः ब्रजनारायण अपने बडे भाई महाराज नारायण और माताजी के साथ मामा पं. लालता प्रसाद के यहाँ फैजाबाद में आ गये। वहीं से उन्होने शिक्षा प्रारम्भ की और 1907 में एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त कर ली।

बचपन से ही चकबस्त प्रतिभाशाली थे। बारह वर्ष की आयु से ही उन्होंने कविता लिखनी प्रारम्भ कर दी थी। विद्यार्थी काल में ही 'इकबाल' और 'दाग' जैसे शायरों पर लेख लिख दिए थे। 1905 में पं. पृथ्वीराजनाथ नागू की पुत्री के साथ उनका विवाह हुआ लेकिन 1906 में उनकी पत्नी पुत्र रत्न के जन्म के पश्चात् स्वयं काल कवलित हो गयी। कुछ दिनों बाद बच्चा भी चल बसा। 1907 में पं. सूरजनाथ आगा की पुत्री खेमा से इनका पुनः विवाह हुआ।

चकबस्त के काव्य का अध्ययन करने पर हमें उनके निम्न विचार एवं विशेषताऐं दृष्टिगोचर होती है।

राष्ट्रवादी विचार

चकबस्त उदारमत राष्ट्रवादी थे चकबस्त किसी भी प्रकार से समाजवादी नहीं थे लेकिन आर्थिक समस्याओं पर उनके विचार बहुत सुलझे हुये थे। धन दौलत के लिये वे अपनी नज्म मुरक्कए–इबरत के कुछ शेरों में इस तरह के विचार प्रकट करते है कि –

दौलत से है अब जीनते–काशानए तहजीब
कहते है इसे शम्ए–जलोखानए–तहजीब।
ज़र आप नहीं दुश्मने–इख़लाको–अदब है
जो हद से गुज़र जाती है वह इसकी तलब है।
महरूम मए–ऐश से यह खस्ताजिगर है
मालिक से नहीं ज़र के फ़क़त बंदए ज़र है।

दिखावे की भर्त्सना करते हुए कहते है किः–

जान से शौके–नुमाइश में गुज़र जाएं अभी
कब्र चांदी की जो मिल जाए तो मर जाए अभी।

धर्मसम्बन्धी विचार

चकबस्त को राष्ट्रवादी माना गया है मगर कुछ लोगों ने उन्हे साम्प्रदायिक भी माना है जबकि वे वास्तव में साम्प्रदायिक विरोधी कवि थे। यह सच है कि उनके काव्य में गाय, कृष्ण और रामायण का बहुत उल्लेख मिलता है मगर इसका मललब ये नहीं है कि चकबस्त साम्प्रदायिक है उनके काव्य में कहीं भी किसी भी दूसरे धर्म की आलोचना नहीं है, ना ही परिहास का विषय मिला है। हाँ उन्होने उनका अवश्य मजाक उड़ाया है जो अपने मूल धर्म से हटकर फ़िरकापरस्त हो गये है चाहे वे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो। यह निश्चित था कि चकबस्त अनिश्वरवादी नहीं थे। इसे बाद भी वे धर्म के प्रदर्शन या दिखावटी पक्ष के घोर विरोधी थे।

दिल सूरते – आईना जो रोशन नहीं होता।
जुन्नार पहनने से बिरहमन नहीं होता।।
हक़ परस्ती की जो मैने बुतपरस्ती छोड़कर।
बिरहमन कहने लगे इलहाद का बानी मुझे।।
हमारे और जाहिदों के मजहब में फर्क अगर है तो इस कदर है।
कहेगें हम जिसको पासे – इसां वो उसको खौफ–ए–खुदा कहेगें।।

चकबस्त को धार्मिक विवादों में उलझना कतई पसन्द नहीं है बल्कि वे इससे नफरत करते थे है।

वाजिब नहीं मजहब के मसाइल में भी हुज्जत।
बाचीचए–अतफ़ाल है हफ्तादो – दो मिल्लत है।

चकबस्त वैदिक सर्ववंदना (पैनथीइज्म) पर यकीन करते थे इसी धार्मिक प्रकृति ने आगे वेदान्त और सूफीवाद का रूप धारण कर लिया–

ऐन कसरत में ये वहदत का सबक वेद में है
एक ही नूर है जो ज़र्रेओ–खुरशीद में है।

फिरकापरस्ती से वे बहुत नफरत करते थे और उनका अपनी शायरी में मजाक उड़ाया करते थे जेसेः–

निफ़ाक़ गब्रो–मुसलमां का यूं मिटा आखिर
ये बुत को भूल गये वह खुदा को भूल गये।
कौम की शीराजाबन्दी का गिला बेकार है

रंगे हिन्दू देखकर, तर्जे मुसलमान देखकर।

शिक्षा के प्रति विचार

चकबस्त शिक्षा के प्रति काफी सजग रहे है उनका मानना था कि सफल जीवन के लिये शिक्षा का होना अति आवश्यक है। उन्होने अपने उत्कृष्ट शिक्षा प्रेम को लखनऊ में गंगाप्रसाद पुस्तकालय के उद्घाटन के समय इस तरह से व्यक्त किया कि –

दौलते इल्म लुटेगी इसी डर से दिन रात
हमने सोची है यही नाम पे उनके सोगात।
देर से आये बिरहमन कि हरम से सादात
सब यहीं पायेगें सरभाए तस्कीने हयात।

भारतीय संस्कृति के समर्थक

चकबस्त ने पश्चिमी संस्कृति के बढते प्रभाव व अनुकरण का जबरदस्त विरोध किया है। उनका मानना था की हम भारतियों को अपने देश की संस्कृति में शक्तिशाली और मनोरम तत्वों पर गर्व करना चाहिये, उन्होने अपने द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''सुब्हे उम्मीद'' नवम्बर 1918 में लिखा है कि–

''हमारे अजीजाने वतन की जब गैर कौम की इताअत कबूल की तो उन्हे भी दो किस्म की जजीरें पहननी पड़ी फरमांखाओं के कानून के पर्दे में जो पाबन्दियां उन्हे बर्दाश्त करनी पड़ी उन्हे लोहे की जंजीरें समझना चाहिये, मगर इन जाहिदी पाबंन्दियों से बहुत ज्यादा काबिले–इबरत ख़्यालात की गुलामी थी जिसने गैर कौम की हुकुमत का सिक्का हमारे दिलो दिमाग पर जारी कर दिया। हमारे जज्बातो–ख्यालातों मग़रिबी तहजीब के मसनूई और नुमाइशी रंग में गिरफ्तार हो गये और हम अपने कौमी हिफेज मरातिब से बेखबर हो गये। मैं इस ख्यालात की सिलसिले को सोने की जंजीर कहूंगा जिसे हमने खुशी से पहन लिया और अपनी गिरफ्तारी पर नाज करने लगे।''

नाम रख्खा है नुमाइश का तरक्की ओ रिफार्म
तुम इस अन्दाज के धोखे में न आना हरगि़ज
नस्ल यो रूप की मुनासिब है मगर याद रहे
खाक में गैरते कौमी न मिलाना हरगि़ज
रंगों रोगन तुम्हे यो रूप का मुबारक लेकिन
कौम का नक्श न चेहरे से मिटाना हरगि़ज।

चकबस्त राजनीति में उदारवादी था। वे नरमदली विचारधारा रखते थे। उन्होने हिन्दू संस्कृति को पुष्ट करने का भी भरकस प्रयास किया। उनके देशप्रेम की निष्ठा का प्रभाव संक्रामक था, चकबस्त ने कुल 45 नज्मे लिखी जिनमें से 12 नज्म पूर्णतः राष्ट्रप्रेम को समर्पित है, उनकी नज्मों और गजलों के शेरो की कुल संख्या 2025 है इनमें से 689 शेर राष्ट्रप्रेम से संबंधी है। जहां तक राष्ट्रप्रेम संबंधी कविता के अनुपात का संबंध है उर्दू का अन्य कोई कवि चकबस्त के पास तक फटक नहीं सकता और किसी साहित्य में भी इस क्षेत्र में चकबस्त का शायद ही कोई मुकाबला कर सके। गुणात्मकता के विचार से चकबस्त की राष्ट्रवादी कविता अन्य कवियों की अपेक्षा काफी ऊँचे स्तर पर है।

जीवन दर्शन

चकबस्त को दार्शनिक कवि के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है वे स्वयं भी अपने आप को दार्शनिक कवि नहीं मानते थे लेकिन अगर चकबस्त ने अपने सामाजिक और राजनैतिक मिशन को सर्वोच्च प्राथमिकता न दी होती और अपने व्यक्तिगत जीवनदर्शन को विकसित किया होता तो वे दार्शनिक कवियों की सूची में आ जाते क्योंकि उनकी व्यक्तिगत विचारधारा बहुत स्पष्ट है। सरस्वती सरन ''कैफ'' के अनुसार चकबस्त के प्रेरणा स्त्रोत है तर्क और जीव के प्रति सशक्त दृष्टिकोण। यह दोनो तत्व ब्रिटिश दार्शनिक विचारधारा की विशेषताऐं है किन्तु साथ ही वे जीवन के

कटु यथार्थो को अनदेखी भी नहीं कर पाते इन दोनों बातों ने शायद अनजाने ही में उन्हे अर्न्तविरोधी के दर्शन को स्वीकार करने को विवश कर दिया था। इनकी गज़लो में भौतिकवाद की सीमाऐं छूने वाला यथार्थवाद, वैदिक अद्वैतवाद, नैतिकवाद के साथ–साथ मानवतावाद और सौन्दर्यबोध के दर्शन भी होते है। चकबस्त का जीवनदर्शन उत्साह से आरम्भ होता है जैसे–

इक हस्तिए बेदार के है दोनो करिश्में।
मौजों में रवानी है जवानी है बसर में।
दिल अहबाब में घर है शिगुफला रहती है खातिर
यही जन्नत है मेरी और यही बागे हरम मेरा।

किन्तु असीम उत्साह के बाद भी जीवन के कठोर तथ्य निराशाप्रद स्थिति का कहीं न कहीं सामना करवा ही देते है और उस स्थिति में चकबस्त अस्तित्ववाद के प्रभाव से शुद्ध नैराश्य की देखते है।

कहां अहात ए–हस्ती से भाग कर जाऊं।
नयी जमीन, नया आस्मां नहीं मिलता।
अजल की नींद में भी ख्वाबे हस्ती गर नजर आया
तो फिर बेकार है तंग आके इस जीने से मर जाना।
जिन्दगी तल्खिए अय्याम का अफसाना है।
जहर मरने के लिये उम्र का पैमाना है।

ऐसा कहीं उल्लेख नहीं है कि चकबस्त ने दर्शन का गहन अध्ययन किया है लेकिन अपनी अनूभुतियों एवं अनुभवों के आधार पर चकबस्त ने ऐसे शेर कहे है जो यह एहसास कराते है कि उन्हें हीगल के दर्शन का गहन अध्ययन था साथ ही वेदान्त का गहन अध्ययन भी किया हुआ था।

वह नहीं बदनाम जिसने दिल को है पैदा किया
दिल से जो पैदा हुई वह आरजू बदनाम है
हम सोचते है रात में तारों को देखकर
शमाए जमीं की है कि ये दाग आस्मां के है।

इस मनः स्थिति से ऐसा यथार्थवाद जन्म लेता है जो भौतिकवाद के समीप जा पहुँचता है जबकि चकबस्त ने भौतिकवाद को अपना जीवन दर्शन कभी नहीं माना–

रह के दुनियां में है यूं तर्के हवस की ख्वाहिश
जिस तरहा अपने ही साऐ से गुरेंजा होना।
जिन्दगी क्या है अनासिर में जहूरे तरतीब
मौत क्या है इन्हीं अजजा का परेंशा होनो।

इस यथार्थवाद के साथ उपजती है कौतूहल की भावना और इसके बाद अज्ञेयता का दर्शन उपजता है।

असले बीनिश को तो हस्ती में खुदा की शक्र है
उनपे हसरत है जो बंदे को खुदा कहते है
अगर कोनो मकां इक शौबदा है उसकी कुदरत का
तो इस दुनियां में आखिर किसलिये आया कदम मेरा।

अपने तमाम यथार्थवाद के बाद भी चकबस्त नैतिकता का दामन नहीं छोड़ते है।

जमाने के मुअल्लिम इम्तहां उनका नहीं लेता।
जो आंखे खोलकर यह बर्से – हस्ती याद करते है।

मानवतावाद और सौन्दर्यबोध

लेकिन चकबस्त के काव्य में दो तत्व स्पष्ट दिखाई देते है मानवतावाद और सौन्दर्य बोध–

दर्दे दिल पासे वफा जज्बाए ईमां होना
आदमीयत है यही और यहीं इंसाँ होना।
खिदमते इसाँ से दिल को आशना करते रहे
दिल के आइने पे उल्फत की जिला करते रहे।

चकबस्त की विचार सूक्ष्मता का खूबसूरत उदाहरण है–

दफ्तरे हुस्न पे मुहरे– यरे – कुदरत समझो
फूल का खाक के तूदे से नुमांयाँ होना।

कुल मिलाकर चकबस्त का काव्यदर्शन यथार्थवादी है जिसमें रहस्यवाद नहीं है जबकि उनके सारे कथ्यों में गरिमा, तार्किकता, और सामाजिक उत्तरदायित्व के स्वर गूंजते रहते है।

प्रकृति चित्रण

1916 ई. में देहरादून की प्रशंसा में चकबस्त ने एक बहुत सुन्दर नज्म कही थी बिल्कुल सुगठित और सशक्त प्रकृति वर्णन के साथ दार्शनिक उक्तियां भी उस नज्म में गूंथ रखी थी।

तमाम शहर है गर्दो – गुबार से खाली
जिधर निगाह उठाओं उधर है हरियाली।
लिबास पहने है कुल खिश्तोन्संग सब्जे का
वजाय खाक के उड़ता है रंग सब्जे का
असर खिजा का हो क्या ताजगी के मस्कन में
बहार इसको छुपाये है अपने दामन में
धने दरखत हरी झाड़ियां जमीं शादाब
लतीफो – सर्द हवा पाक साफ चश्में आब
कमां कभी नहीं शादाबियों के सायां में
ठहर नहीं बहार आ के इस गुलिस्तां में।

इसी तरह ''जल्वए सुब्हा'' में प्रातः काल का शानदार चित्रण–

दरियाए–फलक में था अजब नूर का आलम
चक्कर में था गर्दाब–सिफत नैयरे आजम
उठती थी शुआओं की जो मौजे वो वो शरदम
सैयारे हबाबों की तरह मिटते थे पै हम

पक्षियों का वर्णन बागों, जंगलों, रेगिस्तानों, नदियों और समुद्रों का उल्लेख चकबस्त के काव्य में पर्याप्त मिलता है।

मनोहारी बिम्बविधान

खाके हिन्द नज्म का एक शेर है–

हरसुबह है ये खिदमत खुशिर्दि – पुरजियां की
किरनों से गूंथता है चोटी हिमालय की

चकबस्त का यह शेर उनके बिम्बविधान का एक शानदार उदाहरण है इसी तरह एक कोमल बिम्ब का यह खूबसूरत उदाहरण गंगाप्रसाद वर्मा की मृत्यु पर लिखे मरसिये का एक शेर है–

चांदनी रात में जिस वक्त हवा आती है

कौम के दिल में धड़कने की सदा आती है

गोपालकृष्ण गोखले जैसे देशभक्त के बैचेन, आत्मोत्सर्गी, साहसी और सत्य–निष्ठावान ह्रदय का बेहत्तर चित्रण गोखले के मरसिए में एक शेर चकबस्त ने इतना अच्छा लिखा है कि बिम्ब विधान कला का प्रभाव देखते ही बनता है।

खुदा के हुक्म से जब आबो गिल बना तेरा
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा।

रूपक

चकबस्त उपमाओं और रूपकों के चुनाव के मामले में बड़े जागरूक हैं उनकी उपमाऐ और रूपक वर्ण्य विषय से पूरा मेल खाते है जैसे उनकी नज्म ''गाय'' से :–

रंग काला हो कि उजला यही कहती है नजर
बिन्दरावन की वो है शाम ये मथुरा की सहर

केवल करूणात्मक या प्रेरक बातों के प्रसंग में ही चकबस्त के चित्र संर्वागपूर्ण हों ऐसा नहीं है, बल्कि सौन्दर्य बोध के कारण उनके वर्णन हर जगह चल–चित्र जैसे बन जाते है। श्री कृष्ण विषयक नज्म उदाहरणः–

शोखी तर्रार हंसी छोकरियां गोकुल की
चली आती है सुराही लिये जमुनाजल की
दिल जवानी की उमंगो पे मचल जाता है
खिलखिला पड़ती है जब पांव फिसल जाता है।

निष्कर्ष

चकबस्त लखनऊ के व्यवहार आदि के अच्छे आदर्श थे। इनके स्वभाव में ऐसी विनम्रता, मिलनसारी, सज्जनता तथा सुव्यवहार शीलता थी कि वे सर्वजन प्रिय हो गये थे। धार्मिक कट्टरता इनमें नाम को भी नहीं थी। इन्होंने अपने पूर्ववर्ती कवियों की उर्दू कविताऐं पढ़ी थी और इसका प्रभाव इनके साहित्य पर पड़ा। इन्होंने अपने समय के नेताओं पर मर्सिए भी लिखे जो पाठको के ह्रदय में देशभक्ति जाग्रत करते है। इनका उच्च कोटी का दृश्य वर्णन व शिल्प विधान एक अलग ही छाप छोड जाता है। इनकी वर्णन शैली में लखनउ की रंगीनी तथा दिल्ली की सादगी और प्रभावोत्पादकता का सुंदर मेल है।

***सहायक प्रोफेसर**
हिन्दी विभाग
एस.एस.जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
सांगानेर, जयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. सुबहे वतन– चकबस्त का कविता संग्रह, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद दूसरा संस्करण–1926
2. भारतीय साहित्य के निर्माता – चकबस्त–सरस्वती सरन कैफ – पृ. 58
3. चकबस्त और बाक़ियाते–चकबस्त– कालीदास गुप्ता 'रिजा' – पृ. 70
4. भारतीय साहित्य के निर्माता – चकबस्त–सरस्वती सरन कैफ – पृ. 63
5. चकबस्त–हयात और अदबी खिदमत – अफ़जाल अहमद – पृ. 32
6. मुकद्दम–ए–शेरो–शायरी–अल्ताफ हुसैन 'हाली' – प्रकाशन– रामनारायण लाल, इलाहाबाद 1962